

कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स (फरवरी 1848)

कम्युनिस्ट घोषणापत्र के विभिन्न संस्करणों की भूमिकाएँ

1. 1872 जर्मन संस्करण की भूमिका
2. 1883 जर्मन संस्करण की भूमिका
3. 1890 जर्मन संस्करण की भूमिका
4. 1892 पोलिश संस्करण की भूमिका
5. 1893 इतालवी संस्करण की भूमिका

1. 1872 के जर्मन संस्करण की लेखकों द्वारा लिखित भूमिका

कम्युनिस्ट लीग मजदूरों का अन्तरराष्ट्रीय संघ था। उस जमाने की स्थितियों में यह एक गुप्त संगठन ही हो सकता था। नवम्बर 1847 में लन्दन में सम्पन्न कांग्रेस में लीग ने हम दोनों को यह काम सौंपा था कि हम प्रकाशन के लिए कम्युनिज्म का विस्तृत सैद्धान्तिक और व्यावहारिक कार्यक्रम तैयार करें। यही निम्नलिखित घोषणापत्र के जन्म की कहानी है जिसकी पाण्डुलिपि फरवरी क्रान्ति आरम्भ होने से कुछ सप्ताह पहले लन्दन में मुद्रक के पास पहुँच गयी थी। यह रचना मूलतः जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई थी और इसी भाषा में इसके बाद के संस्करण जर्मनी, इंग्लैण्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित हुए। सन् 1850 में कुमारी हेलेन मैकफर्लेन द्वारा किया गया इसका अंग्रेजी अनुवाद "रेड रिपब्लिकन" पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। सन् 1871 के दौरान इसके कम से कम तीन भिन्न-भिन्न अनुवाद संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित हुए थे। सन् 1848 के जून विद्रोह के कुछ पहले इसका फ्रांसीसी अनुवाद पेरिस से निकला था। और हाल ही में न्यूयॉर्क के "ल सोशलिस्ट" नामक पत्र में वह फिर प्रकाशित हुआ। एक दूसरा फ्रांसीसी अनुवाद तैयार हो रहा है। मूल जर्मन संस्करण के प्रकाशन के कुछ समय बाद इसका पोलिश अनुवाद भी लन्दन में प्रकाशित हुआ था। इस शताब्दी के आठवें दशक में जेनेवा में एक रूसी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। जर्मन में इसके प्रथम संस्करण के थोड़े ही समय बाद डेनिश भाषा में इसका अनुवाद हुआ था।

जब घोषणापत्र लिखा गया था उसके बाद के पच्चीस वर्षों के दौरान यद्यपि परिस्थितियाँ बदल गयी हैं तो भी इस दस्तावेज में निरूपित आम सिद्धान्त उतने ही सही हैं जितने कि वे पहले थे। ब्योरे में एकाध जगह छोटा-मोटा सुधार किया जा सकता है। जैसाकि घोषणापत्र में कहा भी जा चुका है कि सिद्धान्तों का क्रियान्वयन, हर जगह और हमेशा विद्यमान ऐतिहासिक परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। इसीलिए दूसरे अध्याय के अन्त में प्रस्तावित क्रान्तिकारी कार्रवाइयों पर हमने विशेष जोर नहीं दिया है। कई पहलुओं के दृष्टिगत आज यह भाग भिन्न रूप में लिखा जाता। पिछली चौथाई सदी के दौरान विशाल पैमाने के उद्योग में जबरदस्त तरक्की के मद्देनजर; इसके साथ मजदूर वर्ग के पार्टी संगठन में वृद्धि के मद्देनजर; फरवरी

क्रान्ति के दौरान प्राप्त अनुभव के मद्देनजर और उससे भी ज्यादा पेरिस के दो माह के अस्तित्व के दौरान, जब पहली बार सर्वहारा राजनीतिक सत्ता पर काबिज रहा था, प्राप्त अनुभव के मद्देनजर, कुछ हद तक, यह कार्यक्रम पुराना पड़ गया है। (फ्रांस में गृहयुद्ध, 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ की जनरल कौंसिल की चिट्ठी' में इस बात की अधिक विवेचना की गयी है।)

इसके अलावा घोषणापत्र में की गयी समाजवादी साहित्य की आलोचना वर्तमान समय में इसके चलते भी अपूर्ण है कि इसमें 1847 तक प्रकाशित रचनाओं का ही जिक्र है। इसके अलावा विभिन्न विरोधी पार्टियों के साथ कम्युनिस्टों के सम्बन्ध के बारे में जो टिप्पणियाँ की गयी हैं (देखें अध्याय चार), वे यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से राजनीतिक परिस्थितियों के समग्र परिवर्तन हो चुका है इसलिए भी कि जिन पार्टियों का यहाँ जिक्र किया गया है उनमें से अधिकांश पार्टियों का, ऐतिहासिक विकास के दौरान, अस्तित्व समाप्त हो गया है।

इस बीच घोषणापत्र एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया है जिनमें परिवर्तन करने का हमें कोई अधिकार नहीं रह गया है। हो सकता है कि बाद में निकलने वाले पुनर्संस्करण में सन् 1847 से वर्तमान तक के बीच की खाई को पाटने के लिए इसमें भूमिका जोड़ना आवश्यक समझा जाये। यह संस्करण तो इतना अप्रत्याशित था कि हमें उस तरह की भूमिका लिखने की समय ही नहीं मिला।

कार्ल मार्क्स

फ्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 24 जून, 1872

2. 1883 के जर्मन संस्करण की एंगेल्स द्वारा लिखित भूमिका

अफसोस है कि वर्तमान संस्करण की भूमिका पर मुझे अकेले हस्ताक्षर करने पड़ रहे हैं। मार्क्स, जिनका यूरोप तथा अमेरिका का सारा मजदूर वर्ग इतना ऋणी है जितना किसी और का नहीं है, हाईगेट समाधि-स्थली में विश्राम कर रहे हैं और उनकी समाधि के ऊपर घास के पहले पौधे बढ़ने भी लगे हैं। उनकी मृत्यु के बाद घोषणापत्र को संशोधित करने अथवा अनुपूरित करने की बात तो और भी नहीं सोची जा सकती। इसीलिए मैं यहाँ फिर निम्नलिखित बात स्पष्ट रूप से कहना जरूरी मानता हूँ।

घोषणापत्र में शुरू से लेकर आखिर तक विद्यमान मूल चिन्तन, यह चिन्तन विशुद्ध रूप से मार्क्स का है कि प्रत्येक ऐतिहासिक युग का आर्थिक उत्पादन तथा उससे अनिवार्यतः उत्पन्न होने वाला सामाजिक ढाँचा उस युग के राजनीतिक तथा बौद्धिक इतिहास की आधारशिला हुआ करते हैं; कि इसके परिणामस्वरूप (भूमि के आदिम सामुदायिक स्वामित्व के विघटन के बाद से) पूरा इतिहास निरन्तर सामाजिक विकास की भिन्न-भिन्न मंजिलों में वर्ग संघर्षों, शोषितों तथा शोषकों के बीच, शासितों तथा शासकों के बीच संघर्षों का इतिहास रहा है; कि यह संघर्ष अब उस मंजिल में पहुँच चुका है जहाँ शोषित तथा उत्पीड़ित तथा वर्गसंघर्ष से सदा-सर्वदा के लिए मुक्त किये बिना उत्पीड़न तथा शोषण, उत्पीड़न तथा शोषण करने वाले वर्ग (बुर्जआ वर्ग) से अपने को मुक्त नहीं कर सकता।

यह मूल विचार सबसे पहले मार्क्स, और केवल मार्क्स ने प्रस्तुत किया था।^[1]

मैं यह बात पहले भी कई बार कह चुका हूँ; परन्तु अब यह जरूरी है कि स्वयं घोषणापत्र के प्राक्कथन में यह बात मौजूद रहे।

फ्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 28 जून, 1883

* मार्क्स का निधन 14 मार्च, 1883 को लन्दन में हुआ था।

1. बाद में मैंने अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका में लिखा था, “मेरी राय में यह प्रस्थापना इतिहास के क्षेत्र में अवश्यम्भावी रूप से वही करने जा रही है जो डारविन के सिद्धान्त ने जीव विज्ञान के क्षेत्र में किया था। इस प्रस्थापना की ओर हम दोनों 1845 से कुछ सालों तक धीरे-धीरे बढ़ते रहे थे। मैं उसकी ओर स्वतंत्र रूप से कहाँ तक बढ़ सका, इसे “इंग्लैण्ड में मजदूर वर्ग की दशा” नामक मेरी रचना सर्वोत्तम ढंग से प्रदर्शित करती है। परन्तु जब मैं 1845 के वसन्त में मार्क्स से पुनः ब्रसेल्स में मिला तो इस विचार को वह पहले से ही विकसित कर चुके थे और उसे उन्होंने मेरे सामने जिस रूप में प्रस्तुत किया, वह प्रायः उतना ही स्पष्ट था जितने स्पष्ट रूप में मैंने बयान किया है।” (एंगेल्स)

3. 1890 के जर्मन संस्करण की भूमिका^[2]

उपरलिखित पंक्तियों* के लिखे जाने के बाद घोषणापत्र के एक नये जर्मन संस्करण का प्रकाशन आवश्यक हो गया है तथा घोषणापत्र के साथ भी कई बातें ऐसी हो चुकी हैं, जिन्हें यहाँ दर्ज किया जाना चाहिए।

द्वितीय रूसी अनुवाद, जो वेरा जासूलिच³ ने किया है, जेनेवा में 1882 में प्रकाशित हुआ था, उस संस्करण की भूमिका मार्क्स तथा मैंने लिखी थी। दुर्भाग्यवश मूल जर्मन पाण्डुलिपि कहीं खो गयी है, इसलिए मुझे रूसी से दोबारा अनुवाद करना पड़ेगा। स्वाभाविक है कि इससे मूलपाठ में किसी तरह का सुधार होने नहीं जा रहा है। उसमें लिखा हुआ है:

“कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र के बाकूनिन द्वारा किये गये अनुवाद का प्रथम रूसी संस्करण सातवें दशक के आरम्भ में ‘कोलोकोल’ के मुद्रण कार्यालय से प्रकाशित हुआ था। उस समय पश्चिम घोषणापत्र के रूसी संस्करण में केवल साहित्यिक अनोखापन ही देख सकता था। परन्तु अब इस तरह का दृष्टिकोण असम्भव है।

“उस समय (दिसम्बर 1847) सर्वहारा आन्दोलन का कितना सीमित दायरा था, उसे घोषणापत्र का आखिरी अध्याय - विभिन्न पार्टियों के सम्बन्ध में कम्युनिस्टों की स्थिति - सर्वाधिक स्पष्टता के साथ प्रदर्शित कर देता है। इसमें ठीक रूस तथा संयुक्त राज्य अमेरिका गायब है। यह वह जमाना था जब रूस सारे यूरोपीय प्रतिक्रियावाद की आखिरी बड़ी आरक्षित शक्ति था, जब अमेरिका ने आप्रवासन के माध्यम से यूरोप की सारी बेशी सर्वहारा शक्तियों को अपने अन्दर खपा लिया था। दोनों देश यूरोप को कच्चा माल मुहैया कर रहे थे

और साथ ही वे उसके औद्योगिक माल की खपत की मण्डियाँ भी थे। उस समय दोनों इस या उस रूप में विद्यमान यूरोपीय व्यवस्था के आधार-स्तम्भ थे।“ आज स्थिति कितनी बदल चुकी है! ठीक यही यूरोपीय आप्रवासन अथाह कृषि उत्पादन के लिए उत्तरी अमेरिका के वास्ते उपयुक्त सिद्ध हुआ, जिसके साथ होड़, आज छोटे-बड़े सारे भूस्वामित्व की नीवों को ही हिला रही है। इसके अलावा उसने अमेरिका को अपने विपुल औद्योगिक संसाधन इतनी स्फूर्ति के साथ तथा इतने बड़े पैमाने पर अपने लाभार्थ उपयोग में लाने में सक्षम बनाया कि उससे पश्चिमी यूरोप और खास तौर पर इंग्लैण्ड की अब तक मौजूद इजारेदारी की जल्द ही कमर टूट जायेगी। दोनों परिस्थितियोंका स्वयं अमेरिका पर क्रान्तिकारी ढंग से प्रभाव पड़ रहा है। किसानों का लघु तथा मध्यम दर्जे का भूस्वामित्व पूरी संरचना का आधार है, वह कदम-ब-कदम विराट फार्मों के साथ होड़ में ढहता जा रहा है। इसके साथ ही औद्योगिक क्षेत्रों में पहली बार बड़ी संख्या वाले सर्वहारा वर्ग का तथा पूँजियों के कल्पनातीत संकेन्द्रण का विकास हो रहा है।

“और अब रूस! 1848-1849 की क्रान्ति के दौरान यूरोपीय राजाओं ने ही नहीं, वरन यूरोपीय बुर्जुआ वर्ग ने भी सर्वहारा वर्ग से, जो अभी जाग ही रहा था, अपनी मुक्ति मात्र रूसी हस्तक्षेप में पायी। जार को यूरोपीय प्रतिक्रियावाद का सरदार घोषित कर दिया गया। आज वह गातचिना में अपने महल में बैठा है, क्रान्ति का युद्धबन्दी है और रूस यूरोप में क्रान्तिकारी आन्दोलन का हरावल बन गया है।

“कम्युनिस्ट घोषणापत्र ने आधुनिक बुर्जुआ सम्पत्ति सम्बन्धों के अवश्यम्भावी आसन्न विघटन की उद्धोषणा को अपना लक्ष्य बनाया था। परन्तु रूस में हम तेजी से विकसित हो रही पूँजीवादी व्यवस्था तथा बुर्जुआ भूस्वामित्व को देख सकते हैं जिसने अभी-अभी विकसित होना आरम्भ किया है, साथ ही, हम आधी से अधिक ऐसी भूमि पाते हैं जिस पर किसानों का समान स्वामित्व है।

“सवाल यह है - क्या रूसी ग्राम समुदाय, बुरी तरह अन्तर्ध्वस्त होते हुए भी भूमि के आदिकालीन समान स्वामित्व का रूप है, सीधे कम्युनिस्ट ढंग के समान स्वामित्व के उच्चतर रूप में प्रवेश कर सकता है? या इसके विपरीत उसे भी क्या विघटन की उसी प्रक्रिया से गुजरना पड़ेगा जो पश्चिम क ऐतिहासिक विकासक्रम के लिए लाक्षणिक है?

“इस समय इस प्रश्न का एकमात्र उत्तर यह है - यदि रूसी क्रान्ति पश्चिम में सर्वहारा क्रान्ति के लिए इस तरह का संकेत बन जाये कि वे दोनों एक-दूसरे के परिपूरक बन सकें तो भूमि का वर्तमान रूसी सामुदायिक स्वामित्व कम्युनिस्ट विकास के लिए प्रस्थान-बिन्दु बन सकता है।”

उपरोक्त रूसी अनुवाद के प्रकाशन के आस-पास ही पोलिश भाषा में एक नया संस्करण आया (जैसाकि जेनेवा में हुआ)। इसका शीर्षक था: manifest kommunistyczny .

फिर 1885 में कोपेनहेगेन के सोशल डेमोक्रेटिक लाइब्रेरी द्वारा एक नया डेनिश अनुवाद प्रकाशित हुआ। दुर्भाग्यवश वह पर्याप्त रूप से पूर्ण नहीं है; कतिपय नितान्त महत्वपूर्ण अंशों को, जिन्होंने लगता है कि

अनुवादक के सामने कठिनाइयाँ पैदा कीं, छोड़ दिया गया है। इसके अलावा उसमें यत्र-तत्र लापरवाही के चिह्न मिलते हैं ; वे इस कारण आँखों को और भी ज्यादा खटकते हैं कि अनुवाद से पता चलता है कि यदि अनुवादक ने थोड़ी-सी और मेहनत की होती तो वह बहुत सुन्दर काम सम्पन्न करते।

1885 में एक फ्रांसीसी अनुवाद *लसोशलिस्त* में छपा; वह अब तक के अनुवादों में सर्वोत्तम है।**

एक स्पेनिश अनुवाद उसी वर्ष पहले मेड्रिड के एल सोशलिस्ता में छापा तथा फिर एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया गया- *manifesto del partido comunista*, कार्ल मार्क्स तथा फ्रेडरिक एंगेल्स, मेड्रिड, एल सोशलिस्ता प्रकाशन गृह, एर्नान कोर्तेस मार्ग, 8 ।

इस दिलचस्प तथ्य की भी चर्चा कर दूँ कि 1887 में कुस्तुनतुनिया के एक प्रकाशक से एक आर्मीनियाई अनुवाद की पाण्डुलिपि छापने का प्रस्ताव किया गया। परन्तु उस भले आदमी में मार्क्स के नाम से जुड़ी कोई चीज छापने की हिम्मत नहीं हुई। उसने अनुवादक से कहा कि वह पाण्डुलिपि में लेखक के रूप में अपना नाम लिखे परन्तु उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया।

अमेरिका में किये गये कई अनुवाद इंग्लैण्ड में सिलसिलेवार छपते रहे जो न्यूनाधिक रूप से अशुद्ध थे। अन्ततः प्रामाणिक अनुवाद 1888 में तैयार हो गया। यह मेरे मित्र सैमुअल मूर का काम था और उसे प्रेस में भेजने से पहले हम दोनों ने मिलकर उस पर नजर डाली। उसका नाम है, “कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र, कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स। प्रामाणिक अंग्रेजी अनुवाद, सम्पादन तथा नोट्स फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा, 1888, लन्दन विलियम रीव्स, 185, फ्लीट स्ट्रीट, ई.सी.।” मैंने उस संस्करण के कुछ नोट्स प्रस्तुत संस्करण में शामिल किये हैं।

घोषणापत्र का अपना एक अलग इतिहास रहा है। प्रकाशन के साथ ही उसका वैज्ञानिक समाजवाद के हरावलों द्वारा, जिनकी संख्या अभी बिलकुल ही अधिक न थी, उत्साहपूर्ण स्वागत हुआ (जैसाकि पहली भूमिका में उल्लिखित अनुवादों द्वारा स्पष्ट है), किन्तु थोड़े ही समय बाद, जून 1848 में पेरिस के मजदूरों की पराजय उसे शुरू होने वाली प्रतिक्रिया के साथ उसे पृष्ठभूमि में ढकेल दिया गया, और अन्त में जब नवम्बर 1852 में कोलोन के कम्युनिस्टों को सजा दी गयी तो वह “कानूनी तौर पर” बहिष्कृत कर दिया गया। फरवरी क्रान्ति के साथ जिस मजदूर आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था, उसके सार्वजनिक रंगमंच से ओझल हो जाने के बाद घोषणापत्र भी पृष्ठभूमि में चला गया।

जब यूरोप में मजदूर वर्ग ने शासक वर्गों की सत्ता पर एक और प्रहार करने के लिए पर्याप्त शक्ति फिर से संचित कर ली, तो अन्तरराष्ट्रीय मजदूर संघ का जन्म हुआ। उसका उद्देश्य यूरोप और अमेरिका के तमाम जुझारू मजदूर वर्ग को एक विशाल सेना के रूप में एकजुट करना था। इसलिए संघ घोषणापत्र में स्थापित सिद्धान्तों को प्रस्थान-बिन्दु मानकर नहीं चल सकता था। उसका ऐसा कार्यक्रम होना लाजिमी था जिससे इंग्लैण्ड की ट्रेड-यूनियनों, फ्रांस, बेल्जियम, इटली और स्पेन के पूरधोपन्थियों तथा जर्मनी के लसालपन्थियों***

के लिए दरवाजा बन्द न हो जाये। इस तरह के कार्यक्रम को- इण्टरनेशनल की नियमावली के प्राक्कथन को- मार्क्स ने बड़ी खूबी के साथ लिखा जिसे बाकुनिन और अराजकतावादियों तक ने माना। जहाँ तक घोषणापत्र में निरूपित रूप से पैदा होता, पूर्णतया भरोसा किया। एकजुट कार्रवाइयों और विचार-विमर्श से प्रशिक्षित होकर मजदूर धीरे-धीरे इन सिद्धान्तों को समझेंगे और अपनायेंगे। घटनायें तथा पूँजी के विरुद्ध संघर्ष के बराबर उतार-चढ़ाव -विजयों से ज्यादा पराजयें - लड़कों के सामने यह बात प्रत्यक्ष किये बिना नहीं रह सकती थीं कि उनके विभिन्न प्रिय नीम-हकीमी नुस्खे अपर्याप्त हैं जिन पर वे अभी तक टिके हुए थे और उनके दिमागों को मजदूरों की मुक्ति की वास्तविक शर्तों को पूरी तरह समझने के लिए अधिक ग्रहरणशील बनाये बिना नहीं सकती थीं। और मार्क्स सही सिद्ध हुए। 1874 में जब इण्टरनेशनल भंग हो गया तो उस समय का मजदूर वर्ग, 1864 की तुलना में, जब उसकी स्थापना हुई थी, एकतदम भिन्न था। लैटिन देशों में पूरधोपन्थ और जर्मनी की विशिष्ट लासालपन्थ दम तोड़ रहे थे, और घोर दकियानूसी ब्रिटिश ट्रेड यूनियनों तक धीरे-धीरे उस बिन्दु पर पहुँच रही थीं जहाँ 1887 में स्वांसी कांग्रेस में उनके अध्यक्ष उसके नाम पर यह एलान कर सके कि “महाद्वीपीय समाजवाद हमारे लिए आतंक नहीं रह गया है।” जबकि 1887 तक महाद्वीपीय समाजवाद लगभग पूर्णतः वही सिद्धान्त था जिसकी घोषणापत्र ने घोषणा की थी। चुनाँचे घोषणापत्र का इतिहास 1848 के बाद से आधुनिक मजदूर आन्दोलन के इतिहास को एक हद तक

प्रतिबन्धित करता है। आज तो निस्सन्देह घोषणापत्र समस्त समाजवादी साहित्य की सबसे अधिक प्रचलित, सबसे अधिक अन्तरराष्ट्रीय कृति है और वह साइबेरिया से लेकर कैलिफोर्निया तक सभी देशों के करोड़ों मजदूरों का समान कार्यक्रम है।

फिर भी उसके प्रकाशन के समय हम उसे समाजवादी घोषणापत्र नहीं कह सकते थे। 1847 में दो तरह के लोग समाजवादी माने जाते थे। एक ओर विभिन्न कल्पनावादी पद्धतियों के अनुवायी - खासकर इंग्लैण्ड में ओवेनपन्थी और फ्रांस में फूरियेपन्थी, ये दोनों मात्र मरणासन्न संकीर्ण पन्थ बनकर रह गये थे; दूसरी ओर थे नाना प्रकार के सामाजिक नीम-हकीम, जो पूँजी तथा मुनाफे का जरा भी क्षति पहुँचाये बिना, सब तरह की टाँकासाजी के बल पर सब किस्म की सामाजिक बुराइयों का अन्त कर देना चाहते थे। ये दोनों ही तरह के लोग मजदूर आन्दोलन के बाहर थे तथा समर्थन के लिए “शिक्षित” वर्गों पर आस लगाये बैठे रहते थे। इसके विपरीत, मजदूर वर्ग के जिस हिस्से को यह पूरा विश्वास हो चुका था कि मात्र राजनीतिक क्रान्तियाँ पर्याप्त नहीं हैं तथा जो समाज के आमूल पुनर्निर्माण की माँग करता था, वह उस समय अपने को कम्युनिस्ट कहता था। यह भोंडा, बेडौल, विशुद्ध रूप से सहज प्रेरणात्मक किस्म का कम्युनिज्म था; फिर भी उसमें इतनी शक्ति थी कि उसने काल्पनिक कम्युनिज्म की दो पद्धतियों को जन्म दिया- फ्रांस में काबे के “इकारियन” कम्युनिज्म और जर्मनी में वाइटलिंग के कम्युनिज्म उसके ठीक विपरीत स्थिति में था। और चूँकि हमारी उस समय ही यह पक्की राय बन चुकी थी कि “मजदूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मजदूर वर्ग का कार्य ही हो सकता है”, इसलिए इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं थी कि हमें इन दोनों में से कौन-सा नाम अपनाना चाहिए था। तभी से इस नाम का त्याग करने का हमें कभी खयाल नहीं आया।

“दुनिया के मजदूरों, एक हो!” जब यह नारा हमने आज से बयालीस साल पहले - प्रथम पेरिस क्रान्ति के ठीक पहले जब सर्वहारा वर्ग स्वयं अपनी माँगों को लेकर सामने आया था- बुलन्द किया था, तब बहुत थोड़े लोगों ने उसे प्रतिध्वनित किया था। किन्तु उसने सभी देशों के सर्वहाराओं का जो अविनाशी एका कायम कर दिया था वह आज भी जीवित है और पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली है। इसका सबसे बड़ा साक्षी आज का यह दिन है, क्योंकि आज के दिन, जब मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, यूरोप और अमेरिका के सर्वहारा अपनी जुझारू शक्तियों का पुनरीक्षण कर रहे हैं जो पहली बार एक सेना की तरह, एक झण्डे के नीचे, एक तात्कालिक उद्देश्य के लिए - 1866 में इण्टरनेशनल की जेनेवा कांग्रेस द्वारा और फिर 1899 में पेरिस की मजदूर कांग्रेस द्वारा घोषित आठ घण्टे के काम को कानून द्वारा स्थापित कराने के उद्देश्य से - मैदान में उतारी गयी हैं। ओर आज के दृश्य से सभी देशों के पूँजीपतियों और जमींदारों की आँखें खुल जायेंगी ओर वे देख लेंगे कि तमाम देशों के मेहनतकश लोग आज सचमुच एक हैं।

काश, आज मार्क्स भी अपनी आँखों से इस दृश्य को देखने के लिए मेरे साथ होते!

फ्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 1 मई 1890

2. इस भूमिका का मुख्य अंश उस भूमिका का पुनर्नुवाद है जिसे रूसी संस्करण के लिए मार्क्स और एंगेल्स ने जनवरी 1882 में लिखा था।

* एंगेल्स का आशय 1883 के जर्मन संस्करण की अपनी भूमिका से है। -स.

3. एंगेल्स यहाँ पर गलती करते हैं! 1882 में जेनेवा में प्रकाशित रूसी संस्करण का अनुवाद वेरा जासूलिच ने नहीं बल्कि प्लेखानोव ने अनुवाद की भूमिका जार अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या के कुछ माह बाद लिखी थी। उन दिनों नरोदनाया वोल्या ('जनता का संकल्प' जिसके सदस्य घोषित आतंकवादी थे) नामक संगठन की लोकप्रियता अपने शिखर पर थी। वध किये गये सम्राट के दूसरे पुत्र अलेक्सान्द्र तृतीय ने गातचिना के महल में अपनेआप को बन्द कर लिया था और अपने "शानदार राज्याभिषेक" की तिथि को अनिश्चित काल के लिए टाल दिया था। 1883-84 के पहले तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया था कि नरोदनाया वोल्या की महानतम विजय उसके विनाश में अन्तर्निहित थी और कि यूरोप में क्रान्तिकारी आन्दोलन का हरावल एक ऐसा साबित हुआ (जहाँ तक उसके मूल देश का प्रश्न है) जिसके पास उसे सहायता प्रदान करने वाली मुख्य सेना नहीं थी तथा इसलिए रूसी जारशाही के खिलाफ संघर्ष जारी रखने में असमर्थ सिद्ध हुआ था। - डी. आर.

** यह लौरा और पॉल लफार्ग का काम था।

*** लासाल स्वयं हमेशा यही कहते थे कि वह मार्क्स के "शिष्य" हैं और इस नाते, निस्सन्देह, घोषणापत्र की शिक्षाओं को आधार ग्रहण करते हैं। मगर उनके अनुवाइयों की बात बिल्कुल ही अलग थी, जो राजकीय ऋणों से समर्थित उत्पादकों की सहकारी समितियों की लासाल की माँग से आगे नहीं जाते थे और जो समूचे मजदूर वर्ग को राजकीय सहायता के समर्थकों और आत्मनिर्भरता के समर्थकों में विभाजित करते थे। (एंगेल्स की टिप्पणी)

4. 1892 के पोलिश संस्करण की एंगेल्स की भूमिका

कम्युनिस्ट घोषणापत्र का एक नया पोलिश संस्करण निकालना आवश्यक हो गया है, यह तथ्य नाना प्रकार के विचारों को जन्म देता है।

सबसे पहले यह उल्लेखनीय है कि इधर घोषणापत्र यूरोपीय महाद्वीपीय में बड़े पैमाने के उद्योग का एक तरह का सूचक बन गया। किसी देशविशेष में बड़े पैमाने का उद्योग जितना विकसित होता है, उस देश के मजदूरों में सम्पत्तिधारी वर्गों के सम्बन्ध में मजदूर वर्ग के रूप में अपनी स्थिति का ज्ञान हासिल करने की माँग उतनी ही बढ़ती जाती है। उनके मध्य समाजवादी आन्दोलन उतना ही फैलता जाता है तथा घोषणापत्र का जितनी संख्या में प्रसार होता है, उससे मजदूर आन्दोलन की स्थिति को ही नहीं, वरन् बड़े पैमाने के उद्योग के विकास के परिमाण को भी मापा जा सकता है।

इसलिए नया पोलिश संस्करण उद्योग की निश्चिन्त प्रगति इंगित करता है। इसमें सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है कि दस साल पहले प्रकाशित संस्करण के बाद वस्तुतः यह प्रगति हुई है। रूसी पोलैण्ड, कांग्रेसीय पोलैण्ड, रूसी साम्राज्य का बहुत बड़ा औद्योगिक क्षेत्र बन गया है। बड़े पैमाने के रूसी उद्योग जहाँ यत्र-तत्र बिखरा हुआ है।- एक हिस्सा फिनलैण्ड की खाड़ी के आसपास, दूसरा मध्य भाग में (मास्को तथा व्लादीमिर में), तीसरा काला सागर ओर आजोव सागर के तटवर्ती क्षेत्रों तथा अन्य और स्थानों में - वहाँ पोलिश उद्योग को अपेक्षाकृत छोटे इलाके में ढूस दिया गया है और वह इस तरह के संकेन्द्रण के लाभ तथा हानि दोनों भोग रहा है। रूसी उद्योगपतियों ने लाभों को उस समय स्वीकारा जब उन्होंने पोलों को रूसी बनाने की उत्कट इच्छा के बावजूद पोलैण्ड के विरुद्ध संरक्षणात्मक सीमाशुल्कों की माँग की। हानि-पोलिश उद्योगपतियों तथा रूसी सरकार के लिए - पोलिश मजदूरों के बीच समाजवादी विचारों के द्रुत प्रसार तथा घोषणापत्र की बढ़ती हुई माँग में प्रत्यक्ष है।

परन्तु पोलिश उद्योग की यह तीव्र गति, जो रूस के उद्योग के विकास की रफ्तार की पीछे छोड़ रही है, अपनी जगह पोलिश जनता के अनन्त जीवन्तता तथा उसके आसन्न राष्ट्रीय पुनरुत्थान की नयी गारण्टी है। और एक स्वतंत्र, मजबूत पोलैण्ड का पुनरुत्थान ऐसा मामला है जो केवल पोलों से ही नहीं, वरन् हम सबसे भी सरोकार रखता है। यूरोपीय राष्ट्रों का ईमानदारी भरा अन्तरराष्ट्रीय सहयोग तभी सम्भव है जब इनमें से हर राष्ट्र अपने घर में पूर्णतया स्वायत्तशासी हो। 1848 की क्रान्ति ने, जिसने सर्वहारा के झण्डे के नीचे सर्वहारा योद्धाओं से केवल बुर्जुआ वर्ग का काम कराया, अपनी वसीयत के निष्पादकों - लुई बोनापार्ट तथा बिस्मार्क - के जरिये इटली, जर्मनी तथा हंगरी के लिए भी आजादी हासिल की; परन्तु पोलैण्ड को, जिसके द्वारा 1791 से क्रान्ति के लिए किया जाने वाला कार्य इन तीनों देशों के कुल कार्य से अधिक था, उस समय जब उसने 1863 में दस गुना अधिक रूसी शक्ति के सामने शिकस्त खायी, अपने संसाधनों के सहारे छोड़ दिया गया। अभिजात वर्ग पोलिश स्वतंत्रता को न तो बरकरार रख सका और न उसे फिर हासिल कर सका। बुर्जुआ वर्ग के लिए यह स्वतंत्रता आज कम से कम ऐसी तो है ही जिसके प्रति वह उदासीन रह सकता है। फिर

भी यूरोपीय राष्ट्रों के सामंजस्यपूर्ण सहयोग के लिए यह आवश्यक है। उसे केवल तरुण पोलिश सर्वहारा वर्ग हासिल कर सकता है और उसके हाथों में वह सुरक्षित भी है। बात यह है कि यूरोप के बाकी सभी मजदूरों के लिए पोलैण्ड की स्वतंत्रता उतनी ही आवश्यक है जितनी वह स्वयं पोलिश मजदूरों के लिए है।

फ्रेडरिक एंगेल्स

लन्दन, 10 फरवरी 1892

5.1893 के इतालवी संस्करण की एंगेल्स की भूमिका

इतालवी पाठक के नाम

कहा जा सकता है कि कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र के प्रकाशन का 18 मई 1848 के दिन के साथ, मिलान तथा बर्लिन में उन क्रान्तियों के दिन के साथ संयोग हुआ है जो उन दो राष्ट्रों के सशस्त्र विद्रोह थे जिनमें से एक तो यूरोपीय महाद्वीपीय के तथा दूसरा भूमध्यसागर क्षेत्र के केन्द्र में स्थित है। ये दो राष्ट्र तब फूट तथा आन्तरिक कलह के कारण दुर्बल पड़े हुए थे तथा इस कारण वे विदेशी आधिपत्य के चंगुल में फँसे गये। जहाँ इटली ऑस्ट्रिया के सम्राट के मातहत था, वहाँ जर्मनी रूसी साम्राज्य के जारों के जुवे के मातहत था, जो अधिक परोक्ष होते हुए भी कम कारगर नहीं था। 18 मार्च 1848 के नतीजों ने इटली तथा जर्मनी दोनों का यह कलंक धो दिया; अगर 1848 से 1871 तक ये दो महान राष्ट्र पुनर्गठित हुए और फिर से स्वतंत्र हो गये तो इसकी वजह, जैसाकि मार्क्स कहा करते थे, यह थी कि जिन लोगों ने 1848 की क्रान्ति को कुचला था वे ही न चाहते हुए भी उसकी वसीयत के निष्पादक बन गये।

वह क्रान्ति सर्वत्र मजदूर वर्ग का कार्य थी। मजदूर वर्ग ने ही बैरीकेडों का निर्माण किया था और खून देकर इस क्रान्ति की कीमत चुकायी थी। सिर्फ पेरिस के मजदूर ही ऐसे थे कि जिनका सरकार का तख्ता पलटने के पीछे बुर्जुआ वर्ग के बीच विद्यमान अपरिहार्य विरोध से अवश्य अवगत थे, फिर भी न देश की आर्थिक प्रगति और न आम फ्रांसीसी मजदूरों का बौद्धिक विकास अभी ऐसी मंजिल पर पहुँच पाये थे जो सामाजिक पुनर्निर्माण को सम्भव बनाते। अतः अन्ततोगत्वा क्रान्ति के फल बुर्जुआ वर्ग द्वारा बटोरे गये। दूसरे देशों में, इटली, जर्मनी तथा ऑस्ट्रिया में मजदूर बुर्जुआ वर्ग का शसन राष्ट्रीय स्वाधीनता के बिना असम्भव है। अतः 1848 की क्रान्ति भी उन राष्ट्रों की एकता तथा स्वायत्तता को अपने साथ-साथ लेकर आयी थी जिसका इटली, जर्मनी और हंगरी में अभाव था। अब पोलैण्ड की बारी है।

इस तरह 1848 की क्रान्ति भले ही समाजवादी क्रान्ति न रही हो, परन्तु उसने उसके लिए पथ प्रशस्त किया, आधारभूमि तैयार की। तमाम देशों में बड़े पैमाने के उद्योग बहुत बड़ी तादाद वाले, संकेन्द्रित तथा सशक्त सर्वहारा वर्ग का निर्माण किया। हर राष्ट्र की स्वायत्तता तथा एकता को पुनर्स्थापित किये बिना सर्वहारा वर्ग की अन्तरराष्ट्रीय एकता अथवा समान लक्ष्यों की प्राप्ति में इन राष्ट्रों की शान्तिपूर्ण सचेतन सहयोग हासिल

करना असम्भव होगा। जरा 1848 के पूर्व की राजनीतिक अवस्थाओं में इतालवी, हंगेरियाई, जर्मन, पोलिश तथा रूसी मजदूरों की संयुक्त अन्तरराष्ट्रीय कार्रवाई की कल्पना तो कीजिए।

इसलिए 1848 की लड़ाइयाँ बेकार नहीं लड़ी गयीं। उस क्रान्तिकारी युग से हमें उलग करने वाले पैंतालिस वर्ष भी निरुद्देश्य नहीं रहे। फल परिपक्व हो रहे हैं, और मे। केवल यही कामना करता हूँ कि इस इतालवी अनुवाद का प्रकाशन इतालवी सर्वहारा की विजय के लिए उसी तरह शुभ हो जिस तरह मूल का प्रकाशन अन्तरराष्ट्रीय क्रान्ति के लिए शुभ रहा।

घोषणापत्र अतीत में पूँजीवाद द्वारा अदा की गयी क्रान्तिकारी भूमिका के साथ पूरा न्याय करता है। पहला पूँजीवादी राष्ट्र इटली था। सामन्ती मध्य युग के अन्त तथा आधुनिक पूँजीवादी युग के समारम्भ का द्योतक एक विराट मानव है, वह है एक इतालवी दान्ते, मध्ययुग का अन्तिम कवि तथा आधुनिक युग का प्रथम कवि। सन् 1330 की भाँति आज भी नूतन ऐतिहासिक युग समीप आता जा रहा है। क्या इटली हमें ऐसा नया दान्ते देगा जो इस नये सर्वहारा युग के जन्म की घड़ी का द्योतक होगा।

फ्रेडरिक एंगेल्स
लन्दन, 1 फरवरी 1893